
पुस्तक समीक्षा

समीक्षित पुस्तक: "खोजना होगा अमृत कलश"

समीक्षक: गुलाब चंद पटेल

अभि व्यक्ति:

यातना और अंधकार मय जीवन के उजास फेलने प्रेरित करती कवितायें:
सामाजिक चेतना जगाती है

"खोजना होगा अमृत कलश"

काव्य संग्रह

राजकुमार जैन 'राजन' का प्रस्तुत काव्य संग्रह "खोजना होगा अमृत कलश" प्राप्त करने का सौभाग्य मिलने से हमें बहुत खुशी हुई है ।

देव-दानव "अमृत कलश" के लिए एक दुसरे से लड़ाई कर रहे थे । इसे प्राप्त करने की स्पर्धा चलती थी । हमें कोई संघर्ष नहीं करना पड़ा है और देवों की तरह अमृत कलश मेरे हाथों में पहुँच गया है ।

यह कविता संग्रह से एक बार जरूर अमृत पीना होगा । इस में अंधकार से प्रकाश की ओर ले जानेवाली ये रचनाएँ हमें प्रेरित करती हैं । हमारा आत्म विश्वास बढ़ाती है । समाजिक, आर्थिक, प्राकृतिक, सामाजिक परम्पराओं में पनप रही विषमताओं के प्रति आक्रोश है । हताश और हरे हुए व्यक्ति को प्रेरित करती ये कविताएँ आजके संघर्षमय जिन्दगी खोते हुए रिश्तों के मूल में ठुकराघात करती हैं । अंधकार से प्रकाश की ओर आगे बढ़कर जीवन में एक नया सूरज उगाकर सहायता प्राप्त करने प्रेरित करती ये कविताएँ बहुत उत्कृष्ट हैं । भारतीय लोकहित की ओर कविता के माध्यम से इशारा भी किया है ।

इनकी कविताएँ आशा और विश्वास जगाती हैं । कवि के कला रेखांकन भी बहुत सुंदर हैं । राजन में संवेदना बहुत भरी पड़ी हुई है तभी तो इतनी संवेदनशील रचना का जन्म हुआ है । इसके कारण सामाजिक मूल्यों, सांस्कृतिक, राजनितिक, आर्थिक और पुराने समय से लेकर वर्तमान समय तक अपने दिव्य द्रष्टि इसे एक नया मार्ग दिखाती ये कविताएँ बहुत प्रेरक हैं । मैं इन्हें अपने दिल से पवित्र मन से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ ।

कविताओं का विवरण देनेका और किसी किताब के बारे में अपना मत व्यक्त करने का मेरा यह प्रथम प्रयत्न आप सभी को पसंद आएगा ऐसी आशा करता हूँ । अगर इसमें कोई गलती हो तो क्षमा याचता हूँ ।

अमृत कलश में "लाखों संकल्प" कविता में कवि ने आज के युग की चिंताओं का जिक्र किया है । द्रोणाचार्य, अभिमन्यु और अर्जुन महाभारत के पात्रों का उदहारण देकर आज के हस्तिनापुर की बातें की हैं और आजके युग में दुर्योधनों के कमी नहीं हैं ये बात कविता के माध्यम से की गई है ।

आज मानवता और विश्वास खो गये हैं | आज-कल खुनी खेल जो खेले जा रहे हैं वो इतिहास बन जायेगा | ऐसी संभावना कवि ने देखी है, ये “बन जायेगा इतिहास” कविता से ये संभावना निकल आई है |

इन्सान को तुटते हुए दर्पण को देखना है, सर्वथा जैसे सार्थकता नहीं खोता | इस तरह आज दर्पण बनोगे तो सार्थकता प्राप्त होगी ये बात “सार्थकता” कविता में लिखी गई है |

यह धरती पर अमृत के जगह “विष बीज किसने बोया?” इसकी चिंता कवि ने प्रकट की है |

कहीं बम धडाके, विधवाओं के चीत्कार, पशुओं का विलाप, लूट हत्या, बलात्कार की घटनाएँ देखकर कवि ने अपील की है कि आओ हम सब मिलकर जिन्दगीका गीत लिखे ये बात “जिन्दगी का गीत” में राजन जी ने की है |

साँझ के अंधेरों में चांदनी की शीतलता, धर्मशालाओं में गुरुओं की वाणी को ढूँढने में इन्सान असमर्थ है | आज सूर्य किरणों की चमक ने इन्सान को पक्षियों का कलरव, फूलों का रंग, मिट्टी की गंध, गीतों की हृदय को छू लेने वाली वाणी आज अंत हिन यात्रा का अनुभव कराता है ये “अंत हीन अनुसंधान” कविता में दिखाया गया है |

“अंधकार के बीज” कविता में अंधकार के सामने लड़ने के लिए इन्सान को अपना अंतर्मन की मशाल जलाने को आह्वान किया गया है |

फूलों की मुस्कराहट, हवा की खुशबु, चांदनी के पांव के घुंघरू और संस्कृति को ले जाने वाले ‘तुम कौन हो’?. आजकल मरनेवालों से मरवाने वाले बड़े होते हैं |

पतझड़ से डरने का मतलब, जिन्दगी की दौड़ में मिलती कठिनाईयां से नहीं डर कर एक हाथ में बसंत लेकर उसका सामना करने चलते रहने की बात कवि ने “हाथ में बसंत” कविता में की है |

आसमानी हवाओं की खुशबु, धीरे धीरे बहती नदी के कल कल, चिड़िया के चिहु चिहु के साथ मुस्कराहट और सूखे गुलाब के फुल की तरह तुटता हुआ

विश्वास, श्रद्धा को देखकर कवि व्यथित होता है | इसे “नियति” का क्रम मान के स्वीकार किया है |

मंजील की तलाश में कंटीला सफर में चलते हुए भी इन्सान कभी हारा नहीं है | वो रुक रुक कर संघर्ष के साथ चलता आगे बढ़ रहा है | “हारा भी नहीं हूँ मैं” कविता में देखने को मिलती है |

दादर पुल का उदहारण देकर कवि राजन ने “हाँसिये पर वह” कविता में लिखा है की पुल के नीचे एक निराश मन के साथ रोशनी का टुकड़ा टुंढता, फटी पेंटवाला, स्वप्नों के घरोंदे से बुनता हुआ, अपमानित होता हुआ, जुल्म सेहता हुआ, खामोशियों के साथ रोशनी की तमन्ना के साथ चलते इन्सान का सुंदर वर्णन किया है |

स्वप्नों के साथ नई आशा लेकर, आती हुई सुबह शाम होते ही इच्छाएं मौन हो जाती है | इस लिए कवि राजन कहते कि, समय के हाथ में रोशनी को लेकर धरती में इसे उगाओ, शब्द बीज खाद डालकर धैर्य रूपी पानी से सिंचन करने से तुम्हे सफलता जरूर प्राप्त होगी | ऐसा बोध ‘अस्तित्व बोध’ कविता में दिया गया है |

आत्मीय के स्थान पर मुखौटा के रूप में मिलते सफेद पोषाक के सेवक द्वारा चिर-हरण, इच्छा, लालसा, लोभ, प्रमाद, आस्था खो चुके इन्सान बन गया है, लेकिन प्रतीक्षा है की सूर्य के किरणों जैसी, गम जैसी आंधियां दूर करने के लिए “आशा की लौ जलती रहेगी” कविता में ऐसी कल्पना कवि ने की है |

स्वप्नों की पगदंडी पर चलते चलते आज इन्सान के पांव थम गये हैं | भौतिकता के मीठे विष में विश्वास गलत साबित होने लगा है | फिर भी वो चल रहा है, बढ़ रहा है सूर्य की तलाश में | कवि को आशा है कि जीवन में एक नई “स्वप्नों की पगदंडी” जरूर खुलेगी और सफलता प्राप्त होगी |

आज लोगों के जीवन में अजीब सी खामोशी, मौन और सन्नाटा है | अनाम, अन गिनत पीड़ा और प्रश्नों का डंख से समय कहीं खो गया है | कवि कहते हैं कि सफलता के लिए आशा का पूरा “सूरज अपनी हथेली में उगाओ” जरूर सफलता प्राप्त होगी |

भाषणों के माध्यम से एक शतरंगी चाल वाला अभियान चलाया जा रहा है | घड़ियाली आंसू बहाया जा रहा है | गाँव के चौपाला से लेकर मंदिर, मस्जिद, धर्मशाला और संसद के गलियारों के तक बड़ी सावधानी से इन्सान इन्सान के बीच अलगाववाद पैदा कर के विष बांटा जा रहा है | इसलिये कवि 'राजन' के मन में सवाल उठकर बार बार कहता है कि ये दुनिया ऐसी क्यों है? "एक सवाल" कविता में कवि ने कहा है की वही पुराना सवाल पूछता रहूँगा कि ये दुनिया ऐसी क्यों है |

आज इन्सान के कानों ने सुनना छोड़ दिया है | हृदय पत्थर सा हो गया है | झूठ कपट के वेश में रिश्तों को छलनी कर दिया है | इन्सानियत का रंग खो गया है | क्या यही है अच्छे दिन का बोध क्या यही है "अर्थ युग का चमत्कार"? कवि के मन में प्रश्न उठता है |

सूखे फूलों ने अपनी गंध को पकड़ रखी है | स्नेह का अभाव है | आज आशाओं के दीप बुझते जा रहे हैं | कोई सूखे गुलाब के फूलों से महसूस करें | क्यों अहंकार के सामने जंग नहीं छेड़ते हम? "सूखे फूलों की गंध" कविता में ये सुंदर बात कवि ने की है |

कवि ने बेरोजगार की पीड़ा बहु खूबी से व्यक्त की है | बेरोजगार को हमारी दुनिया का महत्व का अंग माना है | ऐसी बात कवि ने "बेरोजगार" कविता के माध्यम से की है |

नहीं देखा मैंने समुद्र फिर भी मेरे मन को कोई छूता है तो मेरे मन के पेहरुओं को लहरे उठाकर फेंक देती है | तूफान बाद समुद्र खामोश हो जाता है | "नहीं देखा समुद्र" फिर भी उसकी गर्जना को महसूस करता हूँ |

अंतहीन आकाश में विश्वास की बाँहों में अजीब सी खामोशी और सन्नाटा को चिरते हुए मन में उठते हैं, इन सांसों से गुजरते हैं | भविष्य को एक मजबूत समाज की तलाश पुरी करने के लिए आँखों में अंकुरित स्वप्नों को खींचने के लिए तुम्ही ने तो कहा था कि "वसंत जरूर आएगी एक दिन" | कवि कहते हैं कि प्यार और जीवन की परिभाषा करते कभी गाढ रिश्ते भी अपना अर्थ खो चुके हैं | तुटते हुए मूल्यों की आंधी से आज संबंधों का वृक्ष हिल रहा है |

कवि राजन कहते हैं कि सूरज ढलने के बाद अँधेरा हो जाता है | फिर सुबह में रोशनी आती है | इस लिए अँधेरे से डरो मत | फसलें शांति की उगायेंगे तो प्यार की जिन्दगी शुरू होगी | इस लिए “भागो न कोई हार के” |

तुटी हुई खटिया पर खाँसती लेटी हुई माँ, सयानी हो रही मुनिया, किताब और पेन के लिए ज़िद करता मुन्ना को देख कर अनाज मंडी में कंधे पर बोरियां ढोता, बीड़ी के कश में धुँआ उठाता, पसीने से तर-बतर “वह आदमी निराश नहीं है” |

संस्कृति के पोषक इस देश में दौपदी के चीरहरण आज भी हो रहे हैं | आदमी नपुंसक हो गया है | आदमी तुम कायर हो | कवि कहते हैं कि संस्कृति रो रही है | समय शरमिंदा है | आज नर बीज खो गया है |

प्रकृति के तांडव के कारण उत्तराखंड, कभी नेपाल, कभी कश्मीर में मौत की बरसात हो रही है | आज भरे पेटों के जूठन भूख से बिलखने लगा है जीवन | आतंक के छाया को दूर करने के लिए रोशनी के पेहरुओं को जलती मशाले लेकर नया प्रकाश फेलाने की सीख कवि राजन “रोशनी के पेहरुओं” कविता में दे रहे हैं |

सृष्टि में सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख आता है | ये निरंतर प्रक्रिया चलती है | नन्ही कोपलें फूटती हैं और सन्देश देती हैं कि एक नया संघर्ष उत्कर्ष लाती हैं |

अंधकार में होती हल-चल को मिटाने के लिए उजाला फेलाने को सूरज की इजजत लेकर एक किरण हमारी जिजीविषा को पुनर्जीवन देगी |

इस देश की बदहाल प्रजा को बड़े बड़े स्ट्रीट लाईट की रोशनी जैसे जगमगाते आश्वासन मिलते हैं | एक मुठठी होंसले में रोशनी सजाते अंधकार को पराजित करने के लिए “एक सूरज फिर उगाना होगा” कविता में सुझाव दिया गया है | एक सूरज फिर उगाना होगा |

रोशनी में रहकर भी अंधकार में जी रहे इन्सान आज मरने से पहले मरना चाहता है | समय के सूरज को अपने हाथों हिलाकर बोध कराता सूरज से एक नई सुबह जरूर होगी |

‘बचपन की बरसात’ कविता में कवि कहते हैं | मुशलाधार बारिश में चूं रहीं पानी की टप टप को कवि ने अमृत कलश में ढोया है |

“खोजना होगा अमृत कलश” कविता में राजन जी बताते हैं कि रंग बदलती दुनिया में दर्द का रंग नहीं बदल पाता है | इन्सान इतना बौना हो गया है कि अपना कहा ही भूल गया है | विश्वास भटक गया है | मुस्कूराहट भीड़ में खो गई हैं | संबंधों पर पहरा है | इंसानियत बहरी है |

जीवन मूल्य अंधकार में खो गया है | सब तरफ मायाजाल में जज्बात और भावनाओं की कोई किंमत नहीं है इस दुनिया में |

कवि कहते हैं कि, सपनों की दुनिया से बाहर निकल कर यातना शिविर से फैले जाल को अब तोड़ना होगा ऐसा आह्वान करते हैं | धरा पर जो प्यार की खुशबु मानवता के घर आंगन को रोशन करे, सदभाव के दिए जलाए, ऐसा अमृत कलश खोजना होगा | उदय होता सूरज “सत्यम शिवम् सुन्दरम्” का प्रकाश फिर से फैला देगा |

राजकुमार राजन बाल साहित्य के क्षेत्र में विस्तार से काम कर रहे हैं | ३० से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं | सौ से अधिक पुरस्कार प्राप्त किये हैं | साहित्य और समाज के प्रति ऐसी उमदा भावना बहुत कम लोगों में दिखाई देती है | राजन जी युवा कवि हैं | साहित्य से समभावना, रचनात्मक, सामाजिक सदभावना और समाज के प्रति संवेदना प्रकट करते कवि हैं |

मैंने विस्तार से संग्रह की प्रत्येक कविताओं का विवेचन पाठकों के लिए संक्षिप्त में देने का प्रयास किया है | जिस कविता का विवेचन हम से छुट गया है वो कवितायें पाठकों के लिए विवेचन करने हेतु मैंने छोड़ दिया है |

अंत में यही कहूँगा कि राजकुमार जैन ‘राजन’ बहुत इमानदार, मानवतावादी, समाज उत्प्रेरक और एक सैनिक की भूमिका निभाते हैं | वर्तमान के अंधेरों में भी

ये कवि जाग रहा है और काम के लिए प्रश्न खोज रहा है | आप उनकी कविताएँ पढ़ेंगे तो आपको भी ये कवितायें सार्थक लगेंगी ऐसा हमें विश्वास है |

मेरी दिल से हार्दिक बधाई एवं शुभ कामनाएं श्री राजकुमार जैन “राजन” जी को अर्पित है |

दिनांक: १५/५/२०१८

गांधीनगर

गुलाबचंद एन.पटेल
कवि/लेखक/अनुवादक
नशा मुक्ति अभियान प्रणेता

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें

